#३. इंधन में विकल्प की आवश्यकता

दिनांक २३/०९/११

मध्यस्थ दर्शन सह-अस्तित्ववाद एक ही उपदेश प्रस्तुत करता है | उसका स्वरुप 'जीने दो और जियो' के रूप में कहा गया है | जीने देने का तात्पर्य उपयोगिता, पूरकता विधि के अर्थ में ही है | इसे परीक्षण करके देखा गया है | पदार्थावस्था मृदा, पाषाण,मणि,धातु के रूप में मानव को उपलब्ध है अर्थात मानव पहचानता है | इसे सर्व मानव पहचानता है | यह मानव के उपयोग में आता है | उपयोग के अनंतर यह यथावत बना रहता है | इस बात को परीक्षण कर देखा गया है | इस विधि से यह बोध होता है कि स्रोत को बनाये रखते हुए उत्पादन किया जा सकता है |

उत्पादन का स्वरुप सामान्याकांक्षा, महत्वाकांक्षा के रूप में गण्य हुआ है | सामान्य आकांक्षाके रूप में समाधान, समृद्धि का धारक वाहक मानव देखने को मिलता है | धारक का मतलब समझ लेना,वाहक का मतलब प्रमाणित करने वाला | इसमें विशेष परिवर्तन नहीं होता | प्रौद्योगिकी विधि से महत्वाकांक्षा सम्बन्धी वस्तुओं का उत्पादन होता है | महत्वाकांक्षा सम्बन्धी वस्तुएं दूरगमन,दूरश्रवण,दूरदर्शन ही हैं | इनमें प्रयोग की जाने वाली वस्तुओं में से इनको बनाने में नाभिकीय ऊर्जा नियोजन होता है | इसी में अतिवाद है | उक्त तीनों प्रकार की वस्तुएं अर्थात दूरश्रवण,दूरगमन,दूरदर्शन, दूरसंचार के रूप में उपयोगी होना सिद्ध हुआ है | इसके स्थान में ऊर्जा के रूप में सौर ऊर्जा, प्रवाह बल के रूप में होना आवश्यक है | इसी के साथ बायोगैस, बायोडीज़ल, गैसीफायर, कचरा के साथ गैसीफायर का उपयोग किया जा सकता है | विसर्जित वस्तु के साथ ही बायोगैस,तैलीय फलों के साथ बायो डीज़ल तैयार होता है | बिना किसी प्रदूषण के सौर ऊर्जा, प्रवाहबल,हवा तरंग का उपयोग हो सकता है | इसमें मुख्य बात है लोहे को बारम्बार प्रयोग करने की स्थिति को पैदा करना होगा |

प्रधान रूप में मानव परम्परा अभी तक जो अभ्यस्त हुआ है वह है खनिज कोयला, खनिज तेल, नाभिकीय द्रव्य | इनके आधार पर जितना भी ऊर्जा उत्पादन है यह सब अपराधिक है | ऊर्जा संतुलन के लिए ही सुझाव है | विकल्पात्मक ऊर्जा को मानव परम्परा में स्थापित होने की आवश्यकता है | इसी क्रम में मानव अपराध मुक्त होने की सम्भावना है | तैलीय वृक्षों के पोषण से, संवर्धन से जंगल समृद्ध होना स्वाभाविक है | इसको हम अपना ही सकते हैं |

कुछ यंत्रों में तेल की आवश्यकता बनती ही है | उसके लिए बायो डीज़ल विधि कारगर होना देखा गया है | मुख्य मुद्दा यही है | मनुष्य को अपने सुविधा संग्रह के तथ्य को मानना आवश्यक नहीं है | इसके स्थान पर समाधान,समृद्धि अपनाना आवश्यक है | तभी मानव अपराध मुक्त विधि से जी सकता है | इसी क्रम में “जीने दो और जियो” जीवों के साथ आता है | जीवों को संतुलित बनाये रखने का अधिकार मानव के पास है ही | इसमें यही विवेचना होना आवश्यक है कि जंगल में किस प्रकार के जीवों का कितना होना आवश्यक है जिससे वन वनस्पतियां समृद्ध होना बना रहे |

मानव, मानव के साथ जीता ही है | इसमें भी 'जीने दो और जियो' का अर्थ सार्थक होता है | अभी तक मानव को ज्ञानी,विज्ञानी, अज्ञानी के रूप में पहचानते हैं | इन तीनों प्रकार में जीता हुआ मानव ही किसी को जीने देना चाहता है, किसी को नहीं जीने देना चाहता है | इसके व्यतिरेक से मुक्ति पाने के लिए समाधान,समृद्धि,अभय, सह-अस्तित्व में

जीना,प्रमाणित रहना आवश्यक है | इन तथ्यों को सार्थक रूप देना ही चेतना विकास मूल्य शिक्षा का मूल आशय है | इस विधि से सर्व मानव समझदारी पूर्वक निर्णयपूर्वक जीने के रूप में सार्थक हो पाता है | सार्थकता का अर्थ है चारों अवस्थाओं के साथ पूरक हो पाता है | ऐसी जीने की विधि से ही अर्थात उपयोगिता, पूरकता विधि से ही मानव अपराध मुक्त होता है | दूसरा कोई रास्ता नहीं है | इस क्रम में सर्वशुभ होता है | सर्वशुभ का आशय समाधान,समृद्धि,अभय,सह-अस्तित्व को प्रमाणित करना है |

सर्वशुभ हो! जय हो! मंगल हो! कल्याण हो!

- ए.नागराज | प्रणेता एवं लेखक, मध्यस्थ दर्शन (सहअस्तित्ववाद) | श्री भजनाश्रम, अमरकंटक, जिला अनूपपुर , म.प्र. भारत